IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"खेल से बुद्धि तक: खिलौना पुस्तकालय की शक्ति"

अनुराग शर्मा

शोध छात्र - पुस्तकालय और सूचना विज्ञान

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश

सारांश - बच्चे का मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास प्रारंभिक बचपन की शिक्षा से आकार पाता है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 ने अनुभवात्मक और खेल-आधारित शिक्षा को व्यापक बाल विकास का महत्व बताया है। खिलौना पुस्तकालय एक नवीन और समावेशी उपाय हैं, जो विशेष रूप से वंचित पृष्ठभूमि के बच्चों को शैक्षिक संसाधनों तक समान पहुंच देते हैं। ये पुस्तकालय रचनात्मकता को बढ़ाते हैं, समस्या-समाधान क्षमताओं को बढ़ाते हैं, और कहानी कहने और लोक खेल जैसी पारंपरिक शिक्षण विधियों की भारत की समृद्ध विरासत को बचाते हैं। इसके अलावा, ये पुस्तकालय लोगों को एक दूसरे से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। यह अध्ययन खिलौना पुस्तकालयों के प्रारंभिक शिक्षा पर प्रभाव, एनईपी-2020 के साथ उनकी संरचना और भारत के शैक्षिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में उनकी प्रासंगिकता पर विचार करता है। इसके अलावा, यह सरकारी और सामाजिक प्रयासों की जांच करता है, चुनौतियों का पता लगाता है और खेल-आधारित शिक्षा को विविध समुदायों में मजबूत करने के लिए स्थायी एकीकरण के उपायों की खोज करता है।

कीवर्ड- खेल-आधारित शिक्षा, खिलौना पुस्तकालय, प्रारंभिक बचपन की शिक्षा, एनईपी 2020, अनुभवात्मक शिक्षा, भारतीय पारंपरिक शिक्षा इत्यादि

प्रस्तावना- तेजी से संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास के साथ बचपन के पहले वर्ष महत्वपूर्ण हैं। इस दौरान बच्चे आवश्यक मूलभूत कौशल हासिल करते हैं, जैसे अपने परिवेश की खोज करना और अपने पर्यावरण से जुड़ना। पारंपरिक भारतीय शिक्षा में कहानी

कहने, स्थानीय खेल और घरेलू खिलौनों के माध्यम से अनुभवात्मक शिक्षा दी गई है, जो रचनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमताओं को बढ़ाता है। एनईपी 2020 मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता को बढ़ावा देने के लिए गतिविधि-आधारित और समग्र शिक्षण दृष्टिकोण की वकालत करता है, क्योंकि यह प्रारंभिक शिक्षा में खेल की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करता है। खिलौना पुस्तकालय खेल-आधारित शिक्षा का एक अच्छी तरह से संरचित मॉडल प्रदान करते हैं, जो विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों को शैक्षिक संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं। ये पुस्तकालय, विशेष रूप से वंचित और ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक पहुंच को पाटने में मदद करते हैं, क्योंकि वे समुदाय-संचालित पहल हैं। खिलौना पुस्तकालयों में एनईपी 2020 के उद्देश्यों के साथ तालमेल बिठाते हुए, पारंपरिक भारतीय शिक्षण तरीकों को आधुनिक शैक्षिक तकनीकों के साथ मिलाकर भारत में प्रारंभिक बचपन की शिक्षा को बदलने की क्षमता है।

खेल-आधारित शिक्षा के लिए खिलौना पुस्तकालयों की अवधारणा - खेल-आधारित शिक्षा में संरचित और असंरचित खेल को एकीकृत किया जाता है। शोधकर्ताओं ने पाया कि रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता, संज्ञानात्मक लचीलेपन और सामाजिक कौशल खेल से बढ़ते हैं। खिलौना पुस्तकालय, एक संसाधन केंद्र के रूप में, बच्चों को विभिन्न खिलौनों तक पहुँच देता है जो उनकी कल्पनाशीलता और सीखने की क्षमता को बढ़ाता है। खिलौना पुस्तकालय खेल को सीखने की प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा बनाते हैं, क्योंकि वे बच्चों को एक सुरक्षित वातावरण देते हैं जहां वे विभिन्न शैक्षिक खिलौनों को खोज सकते हैं। जिससे विविध पृष्ठभूमि के बच्चों को खेल-आधारित शिक्षा से लाभ मिलता है, जो समग्र विकास को बढ़ावा देता है, और इससे शैक्षिक पहुंच में अंतर को पाटते हैं।

खिलौना पुस्तकालयों की शिक्षा में उपयोगिता - खिलौना पुस्तकालय एक समुदाय-आधारित अभियान हैं जो बच्चों को किताबें, खिलौने और सीखने की सामग्री देते हैं जो उनकी उम्र के अनुसार होती हैं। शिक्षा में उनकी भूमिका में शामिल हैं:

- ❖ स्वतंत्र और सहकारी शिक्षा को प्रोत्साहित करना।
- ❖ व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से मोटर और संज्ञानात्मक कौशल को विकसित करना।
- ❖ वंचित समुदायों में शैक्षिक अंतर को पाटना।
- ❖ सामूहिक और भावुक-विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अनुकूल खिलौने देकर सहयोग करना।

एनईपी 2020 और खेल-आधारित शिक्षा पर इसका जोर - एनईपी २०२० इंटरैक्टिव और आकर्षक तरीकों के माध्यम से प्रारंभिक बचपन की शिक्षा में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के महत्व पर प्रकाश डालता है। प्रमुख पहलुओं में शामिल हैं:

- ❖ अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षा पर ध्यान दें।
- ❖ स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और स्वदेशी खिलौनों का एकीकरण।
- ❖ शैक्षिक संसाधन-साझाकरण में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहन, खासकर खिलौना पुस्तकालयों।
- ❖ पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा में खेल-आधारित पाठ्यक्रम का विकास।

भारत में खिलौना पुस्तकालयों का विकास- भारत में खिलौना पुस्तकालयों की पारंपरिक और आधुनिक अवधारणाएं बदल गई हैं; वे अनौपचारिक समुदाय-संचालित सेटअप से संरचित प्रौद्योगिकी-एकीकृत मॉडल तक चले गए हैं। भारतीय शिक्षा परंपरागत रूप से हस्तनिर्मित खिलौने, लोक खेल और कहानी कहने के माध्यम से सीखती थी। सीखने के लिए लोग अक्सर लकड़ी की पहेलियाँ, मिट्टी की मूर्तियाँ और पचीसी और मोक्ष पाटम जैसे स्थानीय बोर्ड गेम बाँटते थे। ये पारंपरिक खिलौने बहुत सांस्कृतिक महत्व रखते थे और प्राकृतिक सामग्री से बनाए गए थे। पुस्तकालय खिलौना अब एसटीईएम-आधारित शैक्षिक संसाधनों की पेशकश करने वाले संरचित संगठनों में बदल गए हैं, जो आधुनिक शैक्षिक ढांचे और तकनीकी प्रगति के उदय से जुड़ा हुआ है। अब खिलौना पुस्तकालय सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं और निजी उद्यमों द्वारा स्कूलों, आंगनवाड़ी और सामुदायिक केंद्रों में बनाए जाते हैं। डिजिटल खिलौना लाइब्रेरी, जो इंटरैक्टिव ई-लर्निंग मॉड्यूल और एआई -संचालित शैक्षिक उपकरणों की विशेषता है, इसके माध्यम से पहुंच का विस्तार करती है। तकनीकी प्रगति को अपनाते हुए सांस्कृतिक विरासत को बरकरार रखते हुए, पारंपरिक खेल सामग्री के साथ आधुनिक खिलौनों को एकीकृत करने से बचपन के विकास को संतुलित रूप से देखा जा सकता है।

स्कूलों में खिलौना पुस्तकालय- केंद्रीय विद्यालयों (केवीएस) और अन्य केंद्रीय विद्यालयों में खिलौना पुस्तकालयों का महत्व भारत सरकार ने समझा है। ये संस्थान समग्र शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हैं और स्थानांतरणीय सरकारी कर्मचारियों के बच्चों को भी शामिल करते हैं। इनमें से कुछ स्कूलों ने हाल ही में खिलौना पुस्तकालयों को शुरू किया है, जो विद्यार्थियों को अनुभवात्मक शिक्षा देने और उनके संज्ञानात्मक कौशल को बढ़ाते हैं।

स्कूलों में प्रमुख पहलों में शामिल हैं:

- ❖ स्कूल परिसर में खिलौना पुस्तकालयों की स्थापना करके खेल-आधारित सीखने का मौका देना।

- ❖ रचनात्मकता और सांस्कृतिक सराहना को बढ़ावा देने के लिए आधुनिक शैक्षिक उपकरणों को पारंपरिक भारतीय खिलौनों के साथ जोड़ना।
- ❖ स्मार्ट कक्षाओं में डिजिटल खिलौना पुस्तकालयों का एकीकरण करके इंटरैक्टिव शिक्षण अनुभवों का समर्थन करना
- ❖ सरकार और गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से अधिक स्कूलों में खिलौना पुस्तकालय नेटवर्क का विस्तार करना, गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच सुनिश्चित करते हुए।

ये खिलौना पुस्तकालय न केवल विद्यार्थियों को पढ़ाने में मदद करते हैं, बल्कि उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास में भी योगदान देते हैं, साथ ही टीम वर्क, समस्या-समाधान और संचार की क्षमता को भी बढ़ाते हैं।

भारत में वर्तमान पहल- भारत में कई पहलों ने खिलौना पुस्तकालयों और खेल-आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया हैः

1. **निपुण भारत मिशन:** एनईपी 2020 के अनुरूप, भारत सरकार ने निपुण भारत मिशन शुरू किया है, जिसका उद्देश्य कक्षा 3 तक के बच्चों में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) को साकार करना है, इंटरैक्टिव शिक्षण के माध्यम से। इस दृष्टिकोण को खेल-आधारित शिक्षण सामग्री प्रदान करके खिलौना पुस्तकालय बच्चों के संज्ञानात्मक, मोटर और सामाजिक-भावनात्मक विकास का समर्थन करते हैं। खिलौना पुस्तकालय ग्रामीण और हाशिए पर रहने वाले समुदायों में बच्चों के लिए मूलभूत शिक्षा को इंटरैक्टिव और सुलभ बनाने के लिए पहेलियों, खिलौनों और शिक्षण खेलों का उपयोग करते हैं।
2. **टॉय बैंक:** एक गैर-लाभकारी संस्था जो हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बच्चों को खेल-आधारित शैक्षिक अवसर देने के लिए काम करती है, खिलौनों के माध्यम से लिंग तटस्थता को प्रोत्साहित करना चाहती है। इस विचारधारा ने खिलौना पुस्तकालयों की स्थापना की है, जो बच्चों को लिंग-आधारित रूढ़िवादिता को मजबूत करने के बजाय अपनी पसंद के खिलौनों को चुनने और उनसे जुड़ने की स्वतंत्रता देता है। ये पुस्तकालय रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं, खेल को सीखने और विकसित करते हैं और सभी बच्चों को समान अवसरों के लिए एक उपकरण के रूप में प्रोत्साहित करते हैं।
3. **सरकार द्वारा संचालित आंगनवाड़ी:** आंगनवाड़ी खिलौना-आधारित शिक्षण सामग्रियों को मिलाकर प्रारंभिक बचपन की शिक्षा को अधिक इंटरैक्टिव और आकर्षक बना रही है। इन सामग्रियों में शैक्षिक खिलौने, पहेलियाँ और खेल हैं जो सामाजिक, संज्ञानात्मक और

मोटर विकास को बढ़ाते हैं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे बच्चों को मूलभूत शिक्षा देते हैं।

4. **निजी और एनजीओ के नेतृत्व वाली पहल:** शहरी और ग्रामीण स्कूलों में खेल-आधारित शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए खिलौना पुस्तकालयों की स्थापना करना।
5. **डिजिटल खिलौना पुस्तकालय:** उभरती पहल जो शैक्षिक गेम और इंटरैक्टिव संसाधनों तक ऑनलाइन पहुंच प्रदान करती हैं।

चुनौतियाँ और सिफ़ारिशें- लाभों के बावजूद, खिलौना पुस्तकालयों को व्यापक रूप से अपनाने में कई बाधाएं हैं, जैसे कम धन, संसाधन और जागरूकता। सिफारिशों में शामिल हैं:

- ❖ सरकारी और निजी क्षेत्र ने अधिक खिलौना पुस्तकालय बनाने में सहयोग बढ़ाना।
- ❖ खिलौना दान और सामुदायिक खेल-आधारित कार्यक्रमों में भागीदारी
- ❖ डिजिटल खिलौना पुस्तकालयों के साथ इंटरैक्टिव शिक्षण प्रौद्योगिकियों का एकीकरण
- ❖ प्रारंभिक बचपन शिक्षा कार्यक्रमों में खिलौना पुस्तकालयों को शामिल करने के लिए नीति समर्थन।
- ❖ केंद्रीय विद्यालयों में खिलौना पुस्तकालयों को मजबूत करने के लिए पाठ्यक्रम एकीकरण और समर्पित वित्त पोषण।

निष्कर्ष- खिलौना पुस्तकालय खेल-आधारित शिक्षा के माध्यम से प्रारंभिक बचपन के विकास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एनईपी 2020 के साथ संरेखित, वे बच्चों के लिए एक न्यायसंगत, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और आकर्षक सीखने का अनुभव प्रदान करते हैं। नीतिगत समर्थन, सामुदायिक भागीदारी और टिकाऊ मॉडल के माध्यम से इन पहलों को मजबूत करने से भारत में प्रारंभिक बचपन की शिक्षा को और बढ़ाया जा सकता है। केंद्रीय विद्यालयों जैसे केंद्रीय विद्यालयों में खिलौना पुस्तकालयों का एकीकरण व्यापक छात्र आबादी के लिए संरचित खेल-आधारित शिक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक कदम आगे है।

सन्दर्भ-

- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
- यूनिसेफ (2021). प्रारंभिक बचपन के विकास में खेल की भूमिका
- टॉयबैंक (2023). भारत में प्ले-आधारित शिक्षण पहल पर वार्षिक रिपोर्ट
- निपुण भारत मिशन (2022). भारत में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता